

धर्मपालजी  
जन्म शताब्दी समारोह

(२०२१-२०२३)





सत्यमेव जयते

उप-राष्ट्रपति, भारत

VICE-PRESIDENT OF INDIA

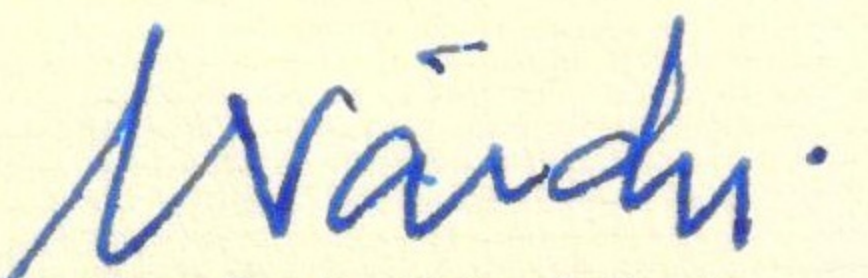
### MESSAGE

I am happy to know that Gandhi Research Foundation, Jalgaon, Maharashtra is organizing the birth centenary celebrations of renowned Gandhian thinker Shri Dharampal (1922-2006) on 19<sup>th</sup> February, 2021 at his ancestral home in Kandhla, Shamli District, Uttar Pradesh.

Shri Dharampalji was deeply inspired by life of Mahatma Gandhi. Responding to Gandhiji's call for individual Satyagraha in 1940, he joined the freedom struggle and participated in Quit India Movement. At the time of Partition, in 1947-48 he had actively participated in the rehabilitation of refugees coming from Pakistan.

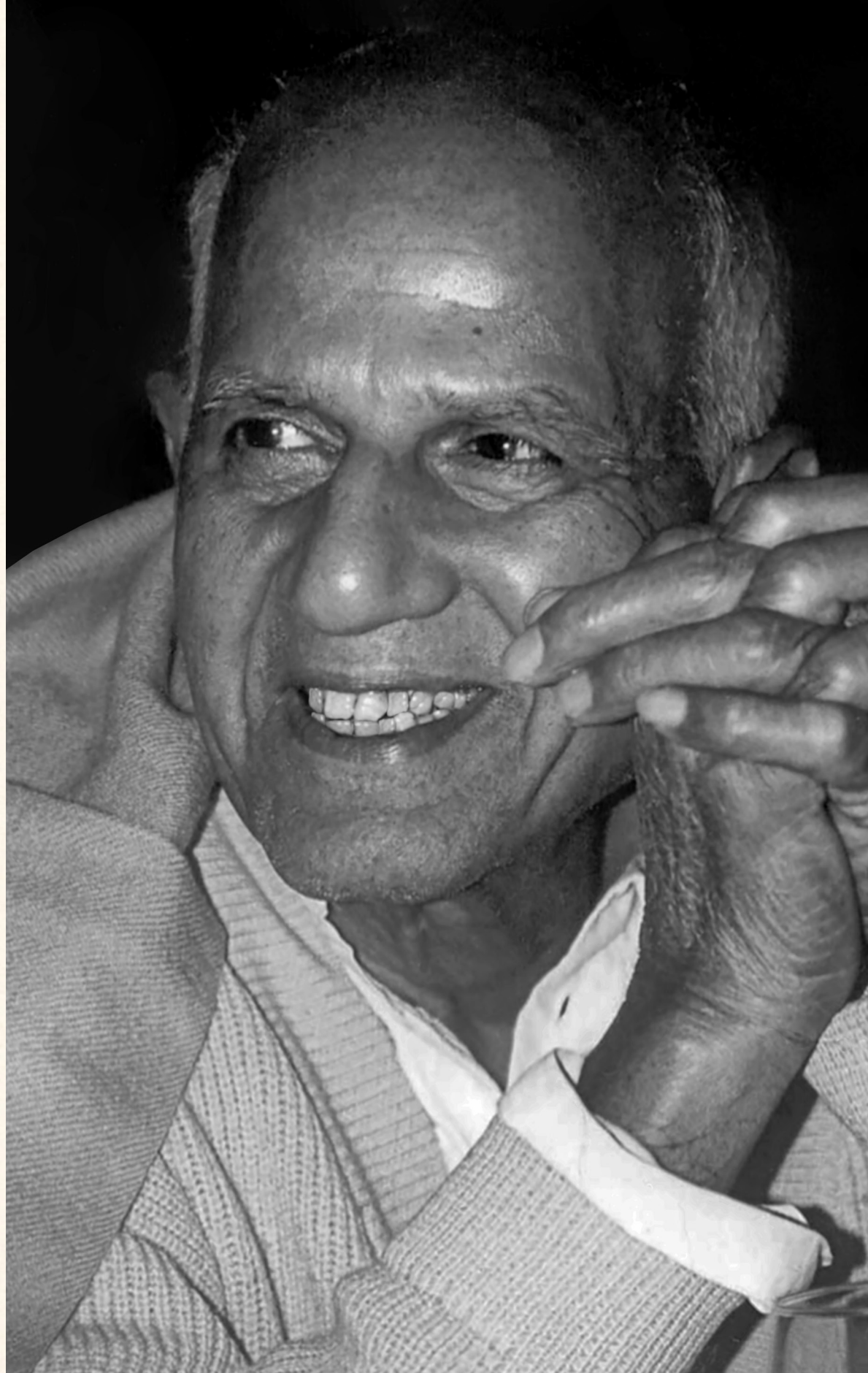
Post-independence, through his extensive writing, Shri Dharampalji contributed greatly to our understanding of Gandhiji. He also devoted a lot of time in the exploration of Indian archives spread over the British Isles and published several books on the nature and functioning of pre-British Indian society. This research has given us a fresh perspective of India's cultural, educational and scientific traditions before the British. As an astute Gandhian, Dharampalji called for an 'intellectual-psychological unburdening' as a matter of urgency so that 'India could come into its own'. This call for introspection will go a long way in boosting our rediscovery of India.

I extend my greetings and congratulations to all the members of the Gandhi Research Foundation on the occasion of Shri Dharampal's birth centenary celebrations and wish the event all success.

  
(M. Venkaiah Naidu)

New Delhi  
16<sup>th</sup> February, 2021.





## श्री धर्मपाल (१९२२-२००६): जीवन एवं कृतित्व

श्री धर्मपाल (जन्म १९ फरवरी १९२२, काँधला, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तरप्रदेश) रचनात्मक एवं कल्पनाशील प्रतिभा के धनी विचारोत्तेजक गाँधीवादी विचारक थे। एक इतिहासकार और राजनीतिक दार्शनिक के रूप में उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर भारत में बुद्धिजीवियों की पीढ़ियों को प्रभावित किया है। बाल्यकाल से ही वे महात्मा गाँधी से बहुत प्रेरित थे। स्वतंत्रता आंदोलन के समय और तदनन्तर भी, उन्होंने गाँधीवादी और सर्वोदय संगठनों के साथ मिलकर काम किया, और नेहरूवादी नीतियों के प्रबल आलोचक रहे। १९४७ के पश्चात, वह भारतीय सहकारी संघ के संस्थापक सदस्य रहे, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने की। १९५० के दशक के उत्तरार्ध से वह श्री जयप्रकाश नारायण के तत्वावधान में AVARD (एसोसिएशन ऑफ वालंटरी एजेंसीज फॉर रूरल डेवलपमेंट) के महासचिव रहे एवं श्री जयप्रकाश नारायण के साथ उनके बड़े घनिष्ठ सम्बन्ध रहे।

१९६० के दशक से धर्मपालजी ने भारत और ब्रिटेन में कई दशकों तक गहन अभिलेखीय शोध किया, और पूर्व-ब्रिटिश भारतीय समाज की प्रकृति और कार्यप्रणाली पर कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। 'इंडियन साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन एटीन्थ सेंचुरी' (१९७१), 'सिविल डिसओबेडिएन्स इन इंडियन ट्रेडिशन' (१९७१), और 'द ब्यूटीफुल ट्री: इंडिजेनस इंडियन एजुकेशन' (१९८३) आदि उनके कुछ मौलिक और महत्वपूर्ण कृतित्व हैं। इन पुस्तकों से भारतीय इतिहास और समाज के प्रति रूढ़िग्रस्त दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन हुआ है। वास्तव में, धर्मपालजी के शोध ने ब्रिटिश विजय के आरंभिक काल तक भारतीय सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों के बारे में हमारी समझ में क्रांति ला दी है। उनके लेखन के संग्रह गुजराती, हिंदी, तमिल और कन्नड़ [निर्माणाधीन] में प्रकाशित हो चुके हैं। २०१५ में उनके आवश्यक लेखन का एक संपादित संस्करण प्रकाशन विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित किया गया है।

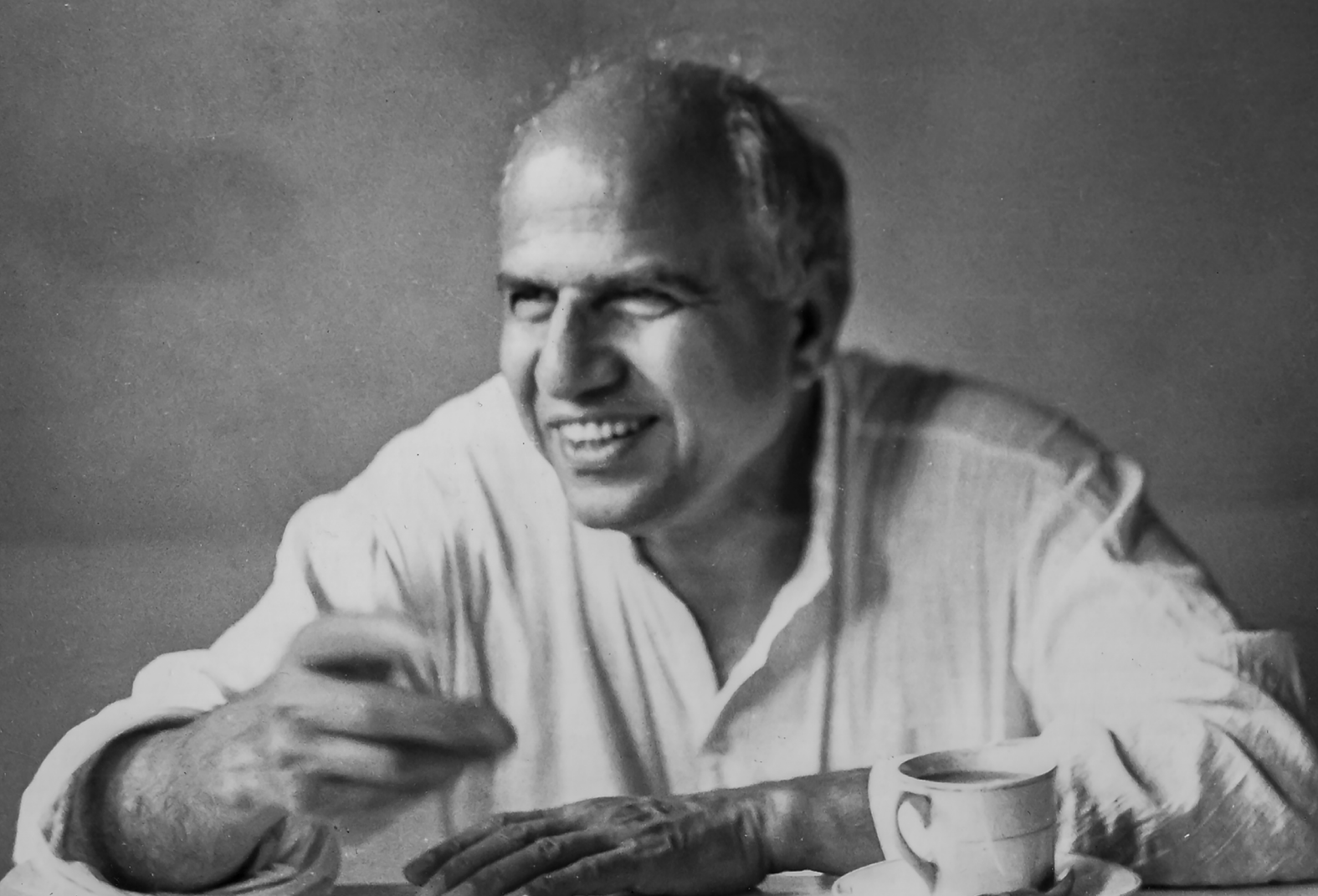
तथापि, सद्यःकालीन इतिहास की हमारी पारम्परिक धारणाओं पर धर्मपालजी के अनुसंधान का विपुल और पूर्ण प्रभाव आना अभी भी शेष है। ब्रिटिश राज के आगमन से पूर्व भारत के अविकसित और पतनशील होने की सामान्यतया माने जाने वाली अवधारणाएँ, जैसा कि उनके द्वारा बार-बार कहा गया, औपनिवेशिक मतारोपण से

जन्य हैं। ये अवधारणाएँ, दुर्भाग्य से, बहुत सारे तथाकथित 'शिक्षित' भारतीयों द्वारा अनुभव किये जाने वाले पश्चिम के प्रति एक सतत अधीनता के भाव के फलस्वरूप अभी तक भी विद्यमान हैं। धर्मपालजी के श्रमसाध्य ऐतिहासिक शोधों से अब इन अवधारणाओं का खण्डन हो रहा है। धर्मपालजी के अनुसार, जैसा कि सेवाग्राम आश्रम में उनके अंतिम दिनों तक वे कहते रहे, भारतीयों की 'बौद्धिक-मनोवैज्ञानिक भारमुक्ति' एक तात्कालिक आवश्यकता का विषय था, ताकि, उन्हीं के शब्दों में, 'भारत अपने स्व में स्थित हो सके'। इसके लिए आवश्यक रूप से वाञ्छनीय था कि भारत का सामाजिक संगठन, उसका शासनतंत्र, उसके सांस्कृतिक और आर्थिक संस्थान - ये सब स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर अपने ही भीतर से पुनरुज्जीवित हो उठें, और गहन आत्म-मंथन के पश्चात सम्बंधित जनो की आवश्यकताओं के अनुरूप निर्धारित हों। भारतीय समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और बौद्धिक कल्याण के प्रति एक सच्चे भारतीय देशभक्त के समान धर्मपालजी की आजीवन प्रतिबद्धता रही। उनका अथक प्रयास ऐसे विभिन्न समसामयिक उपक्रमों और संस्थानों के निर्माण में सहायता करना था, जो कि हमारे लोगों के 'स्वाभाव' के साथ सामंजस्य में हों।

उन्होंने व्यापक यात्राएँ की, व्याख्यान दिए, प्रेस के लिए लेख लिखे एवं पीपीएसटी, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज और इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च सहित अनेक संस्थानों के साथ संपर्क स्थापित किये और अन्य अनेक संस्थानों के सह-संस्थापक रहे। श्री धर्मपालजी का निधन २४ अक्टूबर २००६ को सेवाग्राम (गांधीजी के अंतिम आश्रम) में हुआ, जो १९८० के दशक की शुरुआत से उनका मुख्य निवास स्थान था। वह एक लंबे, क्रियाशील, उत्पादक और प्रभावशाली जीवन जीने के लिए भाग्यशाली थे, जिसमें अनुभव, विचार और आचार में तादात्म्य था। इन सबसे ऊपर, वह निष्काम कर्म के एक उत्कृष्ट साधक एवं अभ्यासक थे। यद्यपि जो थाती वे अपने पीछे छोड़ गए हैं, वह निश्चय ही समृद्ध और वैविध्यपूर्ण है, फिर भी, उनके द्वारा इंगित परन्तु अधूरे छूट गए कार्य भी हमारे लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, और हमारे तत्काल अवधान की आवश्यकता रखते हैं। धर्मपालजी का अग्रणी रूप से समर्पित और प्रवीर उदाहरण आज के युवाओं के लिए एक गतिशील भारत बनाने के लिए प्रेरणा का काम कर सकता है, जो भविष्य के विश्व-समाज का नेतृत्व कर सकता है।







## Dharampal's Life and Work: A Chronology

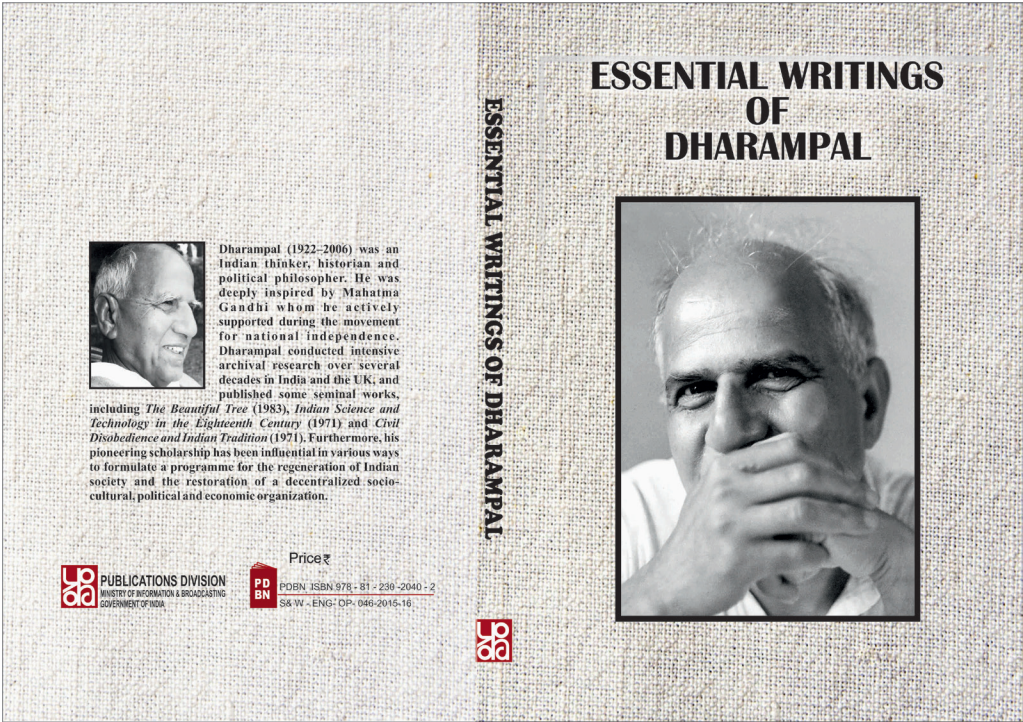
- 1922 February 19, born in Kandhla, Muzaffarnagar, western Uttar Pradesh; moved to Lahore in the late 1920s
- 1929 December, attended the Lahore Session of the Indian National Congress
- 1938 Completed secondary education at the Dayanand Anglo-Vedic School, started B.Sc. in Physics at Government College, Lahore
- 1940 Transferred to Meerut College
- 1940 October, abandoned his studies to join the Freedom Movement
- 1942 August 8, attended the Quit India meeting of the All India Congress Committee (AICC), at Gowalia Tank Maidan, Mumbai; overwhelmed by Mahatma Gandhi's powerful speech; became involved in underground activities of the AICC directorate, came in contact with Sucheta Kripalani, Girdhari Kripalani and Swami Anand, among others
- 1943 April-June, detained in a police lock-up in Kotwali, Delhi, along with Sadiq Ali

- 1944 October, joined Mirabehn at Kisan Ashram, midway between Roorkee and Haridwar; active in village development until August 1947
- 1947 August onwards, in charge of the Congress Socialist Party centre for the rehabilitation of refugees; set up a co-operative rehabilitation camp in Kurukshetra for 400 families from Jhang, Pakistan; in close contact with Kamaladevi Chattopadhyaya, Dr. Ram Manohar Lohia, L.C. Jain, etc.
- 1948 February, co-founder of the Indian Cooperative Union (ICU)
- 1948 November, departed for Israel via Britain; worked in Devonshire in an agricultural reconstruction programme; later enrolled as occasional student (for International Relations and Diplomacy) at the London School of Economics
- 1949 September 3, married Phyllis Ellen Ford; returned with her to India via Europe, Israel, stayed for a few weeks in the kibbutz Degania Alef
- 1950 January, rejoined Mirabehn; established, near Rishikesh on land belonging to the Pashulok Trust, a cooperative village called Bapugram
- 1950 November 24, birth of son, Pradeep
- 1952 November 7, birth of daughter, Gita
- 1954 February, left Bapugram, disillusioned by the futility of the idealistic experiment in village development; in December joined his family in London; stayed for 3 years, worked for Peace News
- 1957 September, returned to India, via Sri Lanka, visiting Dhanushkodi and Rameswaram; reached Delhi in November
- 1958-1964 Elected General Secretary of the Association of Voluntary Agencies for Rural Development (AVARD), founded by Kamaladevi Chattopadhyaya, from 1959 with Jayaprakash Narayan as President; regular contributions to the AVARD Newsletter
- 1962 April, publication of *Panchayat Raj as the Basis of Indian Polity: An Exploration into the Proceedings of the Constituent Assembly*
- 1962 November 21, wrote an open letter (co-signed by N.N. Datta and Roop Narain) to all MPs criticising PM Nehru's weak response to the Chinese invasion; led to the arrest of the 3 co-signatories, imprisoned in Tihar jail for 2 months; sparked off a public debate, with controversial articles published in the press
- 1963 July 31, birth of daughter, Anjali
- 1963-1965 Director of Study and Research of the All India Panchayat Parishad; detailed examination of the Madras Panchayat system,



	research in the Tamil Nadu State Archives (TNSA); preliminary note completed in July 1965
1965	September, left for London due to serious road accident of his son; began extensive research in the British colonial archives
1971	Publication of <i>Indian Science and Technology in the Eighteenth Century and of Civil Disobedience and Indian Tradition</i> ; in November, Seminar in Delhi on "Science, Technology and Society in 18th century India"
1972	Publication of <i>The Madras Panchayat System</i> , vol. II
1972–1973	Appointed Senior Fellow of the A.N. Sinha Institute of Social Sciences, Patna
1975–1977	During the Emergency, based in London, launched the "Save J.P. Campaign"
1977	June, returned to India, resided in Patna, Bihar, in close contact with CM Karpuri Thakur, member of Think-Tank
1978	Delivered a series of 3 lectures on "The Clash between India and Europe since the Eighteenth Century", sponsored by <i>Dinman and the Gandhi Peace Foundation</i> ; returned to London in October
1979	Short period of archival research in London, alongside caring for his sick wife
1980	From July resumed research in Chennai, TNSA
1981	Started living in Sevagram; intensive research, writing and lectures on Mahatma Gandhi
1982–2004	Lectures delivered in Pune, Bangalore, Kolkata, Bikaner, Delhi, Chennai, Hyderabad, etc.; articles published in the press and various journals
1983	Publication of <i>The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth Century</i>
1984	Research in the TNSA on the Chengalpattu district records
1985	Elected President of the Patriotic and People-Oriented Science and Technology (PPST) Foundation
1986	Publication of a series of 3 lectures on "Some Aspects of Earlier Indian Society and Polity and their Relevance to the Present", <i>New Quest</i> , vols.56–58
1986	March 29, death of wife, Phyllis
1987	Appointed Member of the Indian Council of Historical Research, re-appointed in 1991, and again in 1999–2001
1990–2006	Distinguished Fellow (Emeritus Fellow since 2000) of the Centre for Policy Studies, Chennai

1991	Published <i>Bharatiya Chitta Manas va Kaal</i> (in Hindi); English translation by Jatinder Bajaj, published in 1993
1992	April, participated in the European Research Foundation conference, Lisbon, paper on <i>India's Polity, its Characteristics and Current Problems</i> (published in 1996)
1993	Insightful statements made in the context of the Ayodhya controversy, cf. his talk "Undamming the Flow", in J.K. Bajaj (ed.): <i>Ayodhya and the Future India</i> , Chennai 1993, pp.213– 238
1999	Publication of <i>Despoliation and Defaming of India</i>
2001	Appointed Chairman of National Commission on Cattle set up by the Government of India
2002	Publication with T.M Mukundan of <i>The British Origin of Cow-Slaughter in India</i>
2002	December, Infinity Foundation Award
2003	Publication of <i>Understanding Gandhi &amp; Rediscovering India: Collection of Essays and Speeches (1956–1998)</i>
2006	October 24, passed away in Sevagram Ashram



Books available online:  
<https://otherindiabookstore.com/books/386-the-collected-writings-of-dharampal>





## Dharampal's Bibliography

### Books & Seminal Articles

1. *Panchayat Raj as the Basis of Indian Polity: An Exploration into the proceedings of the Constituent Assembly*. Foreword by Jayaprakash Narayan. New Delhi: AVARD, 1962.
2. *Indian Science and Technology in the Eighteenth Century: Some Contemporary European Accounts*. Foreword by Dr. D.S. Kothari and Introduction by Dr. William A. Blanpeid. Delhi: Impex India, 1971. Reprinted by Academy of Gandhian Studies, Hyderabad, 1983.
3. *Civil Disobedience and Indian Tradition: with Some Early Nineteenth Century Documents*. Foreword by Jayaprakash Narayan. Varanasi: Sarva Seva Sangh Prakashan, 1971.
4. *The Madras Panchayat System, vol. II: A General Assessment*. Delhi: Impex India, 1972.
5. *The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth Century*. New Delhi: Biblia Impex, 1983. Reprinted by Keerthi Publishing House Pvt. Ltd., Coimbatore, 1995.
6. *Some Aspects of Early Indian Society and Polity and their Relevance to the Present*. Pune: Indian Association for Cultural Freedom (New Quest, vols.56-58), 1986. Marathi translation, *पारंपरिक भारतीय सामाजिक व राजकीय व्यवस्था आणि नवभारताची उभारणी*. Navabharata Masik, 1987; Hindi translation, *अंग्रेजों से पहले का भारत*. Vidisha/ Calcutta: Shatabdi Prakashan, 1988; Tamil translation by K. Ramasubramanian, *Mundeya India Samudayam, Arasamaippu, Sila Amsanga: Avattrin Inreya Poruttam*. Chennai: Cre-A, 1992.

7. *भारतीय चित्त, मानस व काल*. Patna: Pushpa Prakashan, and Chennai: Centre for Policy Studies, 1991. English translation (with a Preface and Glossary) by Jitendra Bajaj, *Bharatiya Chitta, Manas and Kala*. Chennai: Centre for Policy Studies, 1993. Kannada translation by S.R. Ramaswamy, *Bharatiya Chithha, Manasikathe, Kaala*, Rashtrottthana Sahitya, Bangalore, 1996.
  8. *भारत का स्वधर्म*. बीकानेर: वाग्देवी प्रकाशन, 1993
  9. "India's Polity, its Characteristics and Current Problems." In *The Origins of the Modern State in Europe, 13th to 18th Century: The Heritage of the Pre- industrial European State*, edited by Wolfgang Reinhard, 137–163. Lisbon: 1996. Originally presented as a paper at a conference organised by the European Science Foundation, Lisbon, April 1992.
  10. "Undamming the Flow." In *Ayodhya and the Future India*, edited by J.K. Bajaj, 213–238. Chennai: Centre for Policy Studies, 1993.
  11. *India before British Rule and the Basis for India's Resurgence*. Wardha: Gandhi Seva Sangh, 1998.
  12. *Despoliation and Defaming of India: The Early Nineteenth Century British Crusade*. Wardha: Bharat Peetham, 1999.
  13. With T.M. Mukundan, *The British Origin of Cow-Slaughter in India: with some British Documents on the Anti-Kine-Killing Movement 1880-1894*. Mussoorie: Society for Integrated Development of Himalayas [SIDH], 2002. Hindi rendering, *भारत में गौरक्षा व गौवंश वध बन्द करने के सन्दर्भ में कुछ तथ्य एवं विचार*. Mussoorie: Society for integrated Development of Himalayas [SIDH], 2002.
  14. *Understanding Gandhi*. Mapusa: Other India Press, 2003. Tamil translation by Janakipriyan, *Gandhiyai aridal*. Nagercoil: Kalachuvadu Pathippagam, 2010.
  15. *Rediscovering India: Collection of Essays and Speeches (1956–1998)*. Mussoorie: Society for Integrated Development of Himalayas, 2003. Hindi rendering, *भारत की पहचान: धर्मपाल की दृष्टि में*. Mussoorie: SIDH, 2003.
  16. *मति, स्मृति और प्रज्ञा* (धर्मपाल से उदयन वाजपेयी की बातचीत). New Delhi: Vani Prakashan, 2003. Nos. 1–7 & 9 above, along with some other articles by Dharampal published s Dharampal: Collected Writings, 5 volumes. Mapusa: Other India Press, 2000; reissued 2003 & 2007.
- Gujarati translation of 1–14 above, with some other essays by Dharampal, published as धर्मपाल समग्र लेखन, 11 volumes, edited by Indumati Katdare. Ahmedabad: Punarutthan Trust, 2005.
- Hindi translation of 1–14 above, including other articles by Dharampal, in 10 volumes, धर्मपाल समग्र लेखन, edited by Indumati Katdare, Ahmedabad: Punarutthan Trust, 2007.



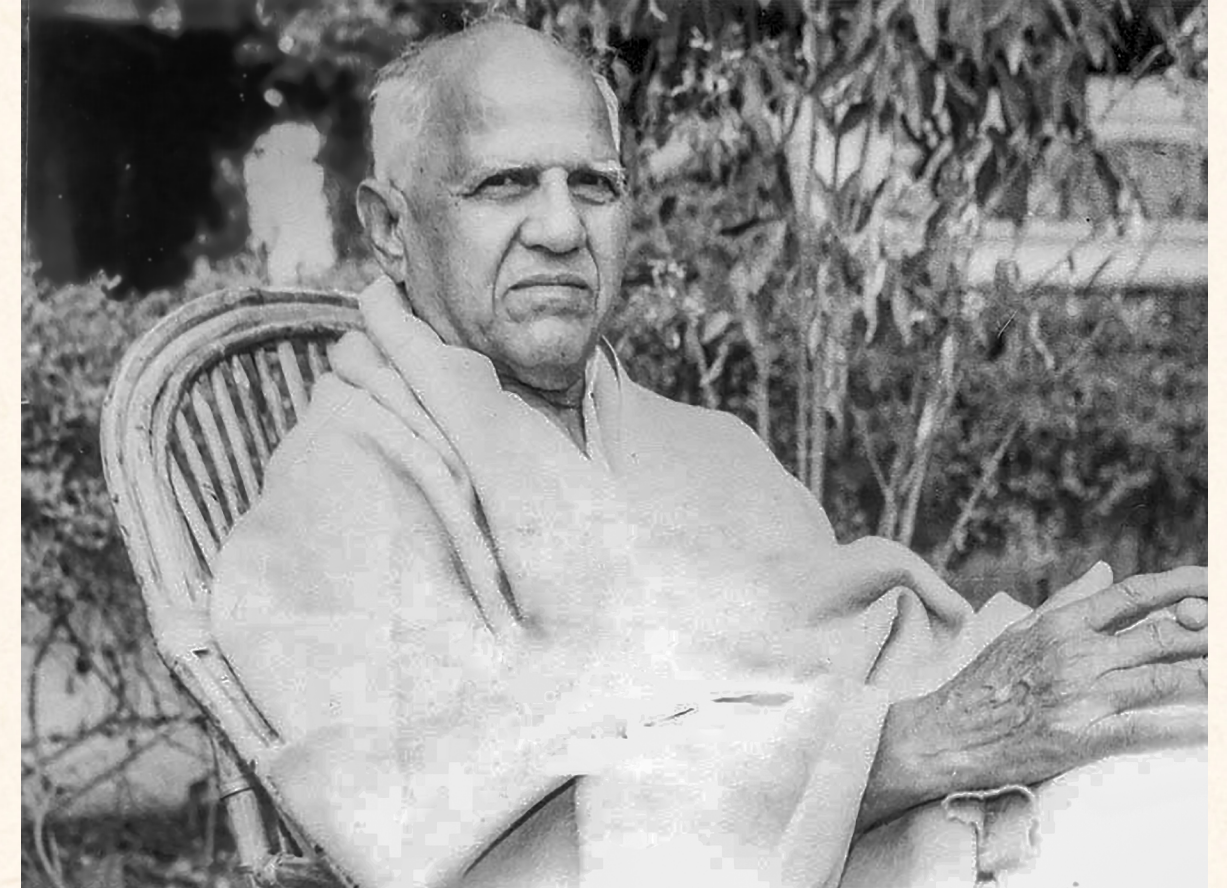


## जनसत्ता में प्रकाशित लेख

(१९७९-२००५) का चयन<sup>१</sup>

१. भारत का कर्तव्य	०१. ११. १९७९
२. सेवाग्राम पयटन केंद्र नहीं तीर्थ है	०४. ०७. १९८४
३. धरती से शिखर तक था हमारा ढांचा (पुणे के भाषण)	२२. ०३. १९८६
४. मजदूरी भी ऊँची थी और शिक्षा भी (पुणे के भाषण)	२३. ०३. १९८६
५. सेवाग्राम पर फिर नयी शुरुआत हो	०२. १०. १९८६
६. हमारे अज्ञान की जड़ें कहीं गहरी हैं,	१४. ०५. १९८७
७. गांधीजी से शास्त्रीय चिंतन की परंपरा शुरू हो	१८. ०२. १९८७
८. अपने संविधान पर फिर से सोचना चाहिए	२६. ०१. १९८८
९. पुरानी नींव पर नया भारत बनाने की कोशिश	जुलाई १९८८
१०. महत्व सही जवाब का नहीं सही सवाल का है	१९. ०४. १९९१
११. पंचायत को सरकार से मत जोड़िये, जनसत्ता	११. ०५. १९८९
१२. अपना अध्ययन भी विदेशी निगाह से,	१७. ०४. १९९१
१३. राजनीति, भारतीयता, पश्चिमी सभ्यता, अंग्रेजी शासन और अन्य विषयों पर श्री राम बहादुर राइ से बात चीत शृंखला १ - ७	(२८. ०५. १९९५ - १७. ०७. १९९४)
१४. पराधीनता की कड़िया	२२. ०८. २००५
१५. पूर्ण स्वराज की दिशा,	२३. ०८. २००५
१६. कैसे सार्थक हो गाँधी आश्रम	१४. ०८. २००५
१७. दुखी होने की नहीं, सोचने की ज़रूरत है	२६. ०३. १९९१
१८. हमें अपनी दिशा तै करनी ही होगी,	१८. ०४. १९९१
१९. हमें भारतीय मानस और विवेक को जगाना होगा	१७. ०५. १९८७
२०. दुनिया को अपनी नज़र से देखना (पुणे के भाषण)	०१. ०४. १९८६

<sup>१</sup> ५० से अधिक प्रकाशित किए गए थे, और अन्य राष्ट्रीय पत्रों में लगभग १०० से अधिक; कुछ निबंध अप्रकाशित रहते हैं; उनको सम्मिलित कर हिंदी लेखन का एक खंड भोपाल के धर्मपाल शोध पीठ सहयोग से तैयार किया जा रहा है।



## भारतीय चित्त, मानस एवं काल

“हमारे अभिजनों और शक्तिशाली जनों द्वारा पश्चिम का विमूढ अनुकरण एक पीड़ाप्रद दुर्घटना है। अविवेक और विमूढता की यही स्थिति समाप्त करनी होगी तथा अपने भविष्य के लक्ष्य व दिशा के बारे में राष्ट्रीय बुद्धि से निर्णय लेना होगा। अनिर्णय, अज्ञान और आत्मविरोध की स्थिति किसी भी स्वाधीन समाज को शोभा नहीं देती और इस स्थिति में स्वाधीनता अधिक दिन टिक भी नहीं पाया करती।

अतः यह भटकाव त्यागना होगा। प्रमाद एवं अविवेक को विदाई देनी होगी। आन्तरिक हीनता दूर करनी होगी। अपने इतिहास का, अपनी परम्परा का स्मरण करना होगा, बोध प्राप्त करना होगा तथा आत्मबल एवं इच्छा को जगाना होगा। वही सार्वभौम और सनातन उत्कर्षपथ है, ऋजु पथ है। उसी पथ को अपनाना होगा।”

– श्री धर्मपाल,

भारतीय चित्त, मानस एवं काल (२००७, द्वितीय प्रकाशन), पृष्ठ क्र. १२७





मेरठ, सितम्बर १९९५. धर्मपालजी परिवार के साथ  
(बाएं से दाएं: भाई योगेंद्र पाल, भाई यशपाल, माता मायावती देवी, बहन सुशीला देवी, धर्मपालजी)

धर्मपालजी ने अपने निःस्वार्थ कार्य के माध्यम से हमें अपने समाज की सेवा करने का एक मार्ग दिखाया है।  
कई अधूरी योजनाएं हैं। इसलिए उनकी जन्म शताब्दी मनाने का सबसे अच्छा तरीका है कि  
उनके काम को आगे बढ़ाया जाये।

संपर्क



### धर्मपाल शोधपीठ

स्वराज संस्थान संचालनालय, रवीन्द्र भवन परिसर,  
भोपाल - 462003; दूरभाष: 0755 - 2660563  
ई-मेल: shodhpithdharmopal@gmail.com  
वेबसाइट: www.dharampalshodhpeeth.in

सौजन्य



### गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

गाँधी तीर्थ, पो.बॉ. 118, जैन हिल्स, जलगाँव - 425001.  
दूरभाष: 0257-2264801  
वेबसाइट: www.gandhifoundation.net;  
ई-मेल: info@gandhifoundation.net

For more details, please visit:

Website: [www.dharampal.net](http://www.dharampal.net); Email: [contact@dharampal.net](mailto:contact@dharampal.net)